NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

समाजशास्त्र का परिचय

(Introduction to Sociology)

B.S.O.C.-131

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Vaishali Gupta*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

समाजशास्त्र का परिचय

(Introduction to Sociology)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1
Question Paper—December-2023 (Solved) 1
Question Paper—June-2023 (Solved) 1
Question Paper—December-2022 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-2
Sample Question Paper–1 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. समाजशास्त्र और सामाजिक मानव विज्ञान का उद्‌भव 1
(Emergence of Sociology and Social Anthropology)

2. समाजशास्त्र का मानव विज्ञान के साथ संबंध 10
(Relationship of Sociology with Anthropology)

3. समाजशास्त्र का मनोविज्ञान से संबंध 18
(Relationship of Sociology with Psychology)

4. समाजशास्त्र और इतिहास का संबंध 28
(Relationship of Sociology with History)

5. समाजशास्त्र का अर्थशास्त्र से संबंध 36
(Relationship of Sociology with Economics)

6. समाजशास्त्र का राजनीति विज्ञान से संबंध 44
(Relationship of Sociology with Political Science)

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
7.	संस्कृति और समाज (Culture and Society)	52
8.	सामाजिक समूह और समुदाय (Social Groups and Community)	66
9.	संगठन और संस्थाएँ (Organisations and Institutions)	83
10.	प्रस्थिति और भूमिका (Status and Role)	97
11.	समाजीकरण (Socialisation)	107
12.	संरचना और प्रकार्य (Structure and Function)	123
13.	सामाजिक नियंत्रण और परिवर्तन (Social Control and Change)	141

■ ■

Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

समाजशास्त्र का परिचय

(Introduction to Sociology)

B.S.O.C.-131

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. 19वीं शताब्दी के यूरोपियाई समाज के विध्वंस हेतु उत्तरदायी सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन, जिसने 19वीं शताब्दी के यूरोपीय समाज को प्रभावित किया'

प्रश्न 2. समाजशास्त्र और सामाजिक मानवविज्ञान की समानताओं एवं असमानताओं की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-14, प्रश्न 2

प्रश्न 3. 'संस्कृति' शब्द से आप क्या समझते हैं? इसकी मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-60, प्रश्न 2

प्रश्न 4. इतिहास और समाजशास्त्र के बीच के संबंध की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-31, प्रश्न 1

प्रश्न 5. समुदाय की संकल्पना क्या है? इसके मूल तत्वों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-71, प्रश्न 1

प्रश्न 6. सामाजिक संस्थाएँ क्या हैं? सामाजिक संस्थाओं पर प्रकार्यवादी दृष्टिकोण की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-88, प्रश्न 1, पृष्ठ-85, 'कार्यात्मक परिप्रेक्ष्य'

प्रश्न 7. भूमिका और प्रस्थिति की संकल्पना की चर्चा कीजिए। प्रदत्त और अर्जित प्रस्थिति में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-97, 'प्रस्थिति की अवधारणा', 'भूमिका की अवधारणा', पृष्ठ-102, प्रश्न 5

प्रश्न 8. समाज के अध्ययन में रेडक्लिफ-ब्राउन एवं मलिनोवस्की के दृष्टिकोण में क्या अंतर है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-128, प्रश्न 2

■■

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

समाजशास्त्र का परिचय

(Introduction to Sociology)

B.S.O.C.-131

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. मीड द्वारा प्रतिपादित स्व-विकास के सिद्धांत की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-109, 'जार्ज हर्बर्ट मीड एवं स्वविकास का सिद्धान्त' तथा पृष्ठ-112, प्रश्न 4

प्रश्न 2. समाजशास्त्र और सामाजिक मानवशास्त्र के बीच की समानताओं एवं असमानताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-14, प्रश्न 2

प्रश्न 3. सामाजिक संगठन के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-95, प्रश्न 5

प्रश्न 4. सामाजिक नियंत्रण की एजेंसियाँ क्या हैं? चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-146, प्रश्न 3

प्रश्न 5. सामाजिक समूह क्या है? सामाजिक समूहों के वर्गीकरण का आधार क्या है? वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-68, 'सामाजिक समूह की परिभाषा, समूह वर्गीकरण के आधार'

प्रश्न 6. रेडक्लिफ ब्राउन के संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-127, प्रश्न 1

प्रश्न 7. सामाजिक परिवर्तन क्या है? समाज के विभिन्न पहलुओं पर इसके प्रभाव की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-143, 'सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा और अर्थ', पृष्ठ-148, प्रश्न 6

प्रश्न 8. 'ऐतिहासिक समाजशास्त्र' का वर्णन, समाजशास्त्र के एक उप-विषयक्षेत्र के रूप में कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-30, 'एक उप संकाय के रूप में ऐतिहासिक समाजशास्त्र'

■■

Sample Preview
of
The Chapter

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

समाजशास्त्र का परिचय
(Introduction to Sociology)

समाजशास्त्र और सामाजिक मानव विज्ञान का उद्भव
(Emergence of Sociology and Social Anthropology)

1

परिचय

समाजशास्त्र तथा सामाजिक मानव विज्ञान का गूढ़ संबंध रहा है। समाजशास्त्र तथा सामाजिक मानव विज्ञान में अन्वेषण और पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है। सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत ये दोनों ही नए विषय हैं, दोनों में बहुत-सी समानताएँ हैं, फिर भी समाजशास्त्र तथा सामाजिक मानव विज्ञान के उद्भव के अनेक ऐतिहासिक, किंतु विभिन्न आधार हैं। हालांकि ऐसा माना जाता है कि सामाजिक मानव विज्ञान समाजशास्त्र से कुछ समय पूर्व ही उभरकर आया है। प्रारंभ में इन दोनों के विषयों में अंतर कर पाना बहुत ही मुश्किल था। दोनों विषय कई शताब्दियों पुराने हैं, जबकि शैक्षिक विषय के रूप में ये 19वीं शताब्दी से उभरकर आये हैं।

अध्याय का विहंगावलोकन

समाजशास्त्र का उद्भव

18वीं और 19वीं शताब्दी में पश्चिमी यूरोप में काफी उथल-पुथल रही, जिसके परिणामस्वरूप समाज के प्रति समझ तथा इसमें व्यक्ति के स्थान के प्रति भी प्रतिमान में काफी परिवर्तन हुए। काम्टे और दुर्खीम जैसे समाजशास्त्रियों ने यह तर्क रखा कि मानव की सामाजिक दुनिया के अध्ययन हेतु एक समान वैज्ञानिक व व्यवस्थित दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए। वह समय वैज्ञानिक और औद्योगिक क्रांति का युग था, जिसमें पारंपरिक ग्रामीण कृषक समाज आधुनिक शहरी औद्योगिक समाज में परिवर्तन होने लगा। नए आविष्कारों के परिणामस्वरूप कारखानों में उत्पादन होने लगा। इसी के साथ सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक बदलाव आए, जिनका प्रभाव प्रमुख राजनैतिक क्रांतियों सहित पश्चिमी यूरोपीय समाजों पर पड़ा। इन परिवर्तनों से जो स्थितियाँ पैदा हुईं, वे आशावादी और निराशावादी दोनों रूपों में थीं। पारंपरिक समाजों से आधुनिक समाजों का परिवर्तन आशावादी माना गया, जबकि आधुनिक समाज के परिणामस्वरूप जिस तर्कसंगतता का बढ़ावा मिला, उससे अव्यवस्था व अराजकता की स्थिति पैदा हुई।

ज्ञानोदय काल

18वीं शताब्दी यूरोप में बौद्धिक विकास का काल था, जिसके अंतर्गत नई विचारधाराओं को मान्यता मिली। इस दौर के प्रमुख विचारक थे—चार्ल्स मोंटेस्क्यु तथा जीन जैक्वेस रूसो, जो कि फ्रांसीसी दार्शनिक थे। इस दौर में व्यक्ति ने धर्म और पवित्रता को छोड़कर तर्कसंगतता को अपनाया था। लोग अधिक विवेकशील और आलोचनात्मक बन गए थे। लोगों ने अपनी तर्कसंगत बुद्धि के आधार पर समाज और प्रकृति दोनों का अध्ययन करना शुरू किया। इसी के परिणामस्वरूप फ्रांस व अमरीका में औद्योगिक व वैज्ञानिक क्रांति की शुरुआत हुई।

वैज्ञानिक क्रांति

यूरोप में चौदहवीं से सोलहवीं शताब्दी का समय वैज्ञानिक क्रांति का युग माना जाता है, जिसमें व्यक्ति और प्रकृति के प्रति नए दृष्टिकोण का जन्म हुआ। इस क्रांति के दौरान पिछली सभी मान्यताओं व विचारों पर प्रश्नचिह्न लगे तथा प्रकृति व मानव के विषय में नए विचारों का प्रतिपादन हुआ। कोपर्निकन क्रांति तथा भूकेंद्रित सिद्धांत से सूर्यकेन्द्रित सिद्धांत के प्रति आंदोलन भी इसी दौरान हुआ। इस काल के प्रमुख वैज्ञानिक गैलीलियो, जोहास केप्लर, आइजैक न्यूटन आदि थे, जिन्होंने विज्ञान के क्षेत्र में क्रांति ला दी थी। इसके अलावा डार्विन के उद्विकासवादी सिद्धांत ने बाइबिल के रूढ़िवादी जन्माधारित सिद्धांतों को कटघरे में ला दिया। डार्विन ने मानव के जैविक विकास के वैध प्रमाण पेश किये। इन सिद्धांतों के आधार पर ही समाज के विकासवादी सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया, जिनमें समाजों को निरंतर पनपते व विकसित होने देखा गया। पुनर्जागरण के पश्चात ही मानव शरीर का अध्ययन किया गया, जिससे मानव शरीर की कार्यप्रणाली को समझने में सहायता मिली। इन सभी प्रयोगों के परिणामस्रूप मानव को पुराने विकल्पों के स्थान पर स्थापित किये जा सकने वाले नए विकल्प मिले।

सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन, जिसने 19वीं शताब्दी के यूरोपीय समाज को प्रभावित किया

फ्रांसीसी क्रांति

1798 की फ्रांसीसी क्रांति ने नए विचारों के द्वारा खोले। इससे सामंतवादी युग का समापन हुआ तथा समाज एक नई दिशा की ओर मुड़ा। इस क्रांति का प्रभाव पूरे यूरोपीय समाजों पर तो था ही, साथ ही अन्य महाद्वीपों में सुदूर देशों, जैसे—भारत पर भी इस क्रांति

www.neerajbooks.com

के दौरान उत्पन्न हुए विचारों का प्रभाव पड़ा। फ्रांसीसी क्रांति ने ही स्वतंत्रता, बंधुता तथा समानता जैसे विचारों को जन्म दिया, जोकि भारत के संविधान का आधार भी बने। अन्य यूरोपीय देशों की भाँति 18वीं शताब्दी के दौरान फ्रांस में भी कारण और तर्कवाद पर विचार करना शुरू कर दिया था। यहाँ के प्रमुख दार्शनिक, जिनके विचारों की छाप फ्रांसीसी लोगों पर पड़ी थी, वे तर्कवादी थे। इनका मानना था कि सभी वास्तविक वस्तुओं के पीछे कोई-ना-कोई कारण होता है। इस विचारधारा के प्रमुख विचारक थे—मोटेंस्क्यू (1689-1755), लॉक (1632-1704), वॉल्टेयर (1694-1778) तथा रूसो (1712-1778)। इस क्रांति के परिणामस्वरूप सामंती युग का पतन हुआ तथा समाज में उदार लोकतंत्र को अपनाया गया। 1789 से फ्रांसीसी क्रांति की शुरुआत हुई, जिसमें बहुत-सी राजनीतिक क्रांति या विद्यमान थीं, जो कि 19वीं शताब्दी के मध्य तक चलीं। ये क्रांतियाँ ही समाज विज्ञान संबंधी सिद्धांतों के निर्माण के उदय का आधार बनीं। इन क्रांतियों ने समाज पर कुछ गहरे प्रभाव डाले तथा सकारात्मक परिवर्तनों को दिशा दी, किंतु फिर भी कुछ कट्टरपंथी परिवर्तनों के नकारात्मक परिणाम भी देखने को भी मिले। इस अवधि के कुछ बड़े विचारक मध्य युग के शांतिपूर्ण तथा अपेक्षाकृत व्यवस्थित दिनों को वापिस जाना चाहते थे, इसलिए उन्होंने समाज में व्यवस्था को बनाए रखने के नए मार्ग ढूंढ़ने का प्रयास किया, किंतु अठारहवीं तथा उन्नीसवीं सदी की राजनैतिक क्रांतियों ने उन्हें पलटकर रख दिया। सामाजिक व्यवस्था को शांतिपूर्ण बनाए रखने वालों में विशेष रूप से कॉम्टे, दुखाईम और पार्सन्स थे, जिन्होंने बहुत से सामाजिक मुद्दों को अपने चिंतन का विषय बनाया। 18वीं शताब्दी के अंत तथा 19वीं शताब्दी के शुरू में होने वाली औद्योगिक क्रांति ने समाजशास्त्र के उद्भव को बढ़ावा दिया। औद्यागीकरण के कारण समाज में जो परिवर्तन हो रहे थे, उनसे प्रारंभिक समाजशास्त्री काफी चिंतित थे, क्योंकि औद्योगीकरण के फलस्वरूप समाज शहरों की ओर बढ़ने लगा था और एक नये वर्ग की उत्पत्ति हुई वो था मजदूर वर्ग।

औद्योगिक क्रांति

औद्योगिक क्रांति इंग्लैंड में लगभग 1760 में आरंभ हुई, जिसने लोगों के आर्थिक व सामाजिक जीवन को पूरी तरह से बदल दिया। औद्योगिक क्रांति के दौरान नए उपकरणों व तकनीकों का आविष्कार हुआ, जिससे उत्पादन का पैमाना बढ़ गया। जेम्स हर्ग्रीव्स द्वारा 1767 में स्पिनिंग जेनी का आविष्कार किया गया, जिससे उत्पादन की गति काफी तेज हो गई थी। 1769 में आर्कराइट ने एक उपकरण का आविष्कार किया, जिसका नाम था आर्कराइट्स वाटर फेम, इस उपकरण को रखने के लिए को एक विशेष इमारते बनाई गई, क्योंकि इसका आकार काफी बड़ा था। कहा जाता है कि यहीं से कारखाना प्रणाली का जन्म हुआ। इससे अर्थव्यवस्था की उत्पादन प्रणाली सामंतवादी से पूँजीवादी में बदल गई। इस क्रांति के परिणामस्वरूप हाथ के उत्पादन के स्थान पर मशीन से उत्पादन होने लगा। इस परिवर्तन ने औद्योगिक के आगमन को सूत्रपात किया। जैसे-जैसे औद्योगीकरण का प्रसार होता रहा वैसे-वैसे समाज में बदलाव आते रहे, बैंकों बीमा कंपनियों तथा वित्त निगमों का विकास हुआ और तभी समाज में नए वर्ग उभरे, जिनमें औद्योगिक श्रमिक, प्रबधंक व पूँजीपति थे। उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ शहरों की जनसंख्या में भी वृद्धि हुई तथा औद्योगिक शहर तेजी से बढ़ने लगे, जिन्हें विशाल सामाजिक-आर्थिक असमानताओं द्वारा दर्शाया गया। इन परिवर्तनों का संबंध रूढ़िवादी तथा कट्टरपंथी दोनों प्रकार के विचारकों से है। रूढ़िवादी चिंतित थे कि ऐसी परिस्थितियों से अराजकता व अव्यवस्था को प्रोत्साहन मिलेगा, जबकि फ्रेडरिक एंगल्स जैसे कट्टरपंथियों का मानना था कि श्रमिक वर्ग क्रांति करेगा और उससे सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा मिलेगा। हालांकि चिताएँ अलग-अलग थीं, फिर भी उस समय के सामाजिक विचारक औद्योगिक क्रांति के प्रभावों से जूझ रहे थे। औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले महत्त्वपूर्ण विषय, जिन पर प्रारंभिक समाजशास्त्रियों का ध्यान केनिद्रत था, वे थे—श्रमिकों की स्थिति, संपत्ति का हस्तांतरण, शहरीकरण तथा प्रौद्योगिकी।

समाजशास्त्र के सिद्धांत का उदय

जिस समय समाजशास्त्र को एक विषय के रूप में स्वीकार किया गया, वह समय ज्ञानोदय का समय था और इस समय बौद्धिक विकास तथा दार्शनिक विचारों मे बदलाव आ रहे थे। उस समय के विचारकों ने समाज में हो रहे परिवर्तनों के आधार पर यह राय बनाई कि इतिहास का दर्शन इस तथ्य से सहमत है कि समाज की प्रगति अलग-अलग चरणों में होती है और इसी कारण समाज को समझने के लिए वैज्ञानिक व व्यवस्थित तरीके अपनाए जा सकते हैं। दूसरा, सामाजिक सर्वेक्षण की मात्रात्मक पद्धति के रूप में सामाजिक सर्वेक्षण को एक ऐसा उपकरण माना गया, जिससे समाज में मौजूद सामाजिक समस्याओं का समाधान खोजा जा सकता है। इन्हीं विचारों ने समाजशास्त्र जैसे विषय को जन्म दिया। उस समय सामाजिक सिद्धांत पर रूढ़िवादी प्रतिक्रियाओं का प्रभाव था, जिसमें यह माना जाता था कि समाज में स्थिरता व शांति जरूरी है। उस समय के समाजशास्त्री लुईस डी ब्रोनाल्ड (1754-1840) क्रांतिकारी परिवर्तनों से काफी चिंतित थे, इन्हीं परिवर्तनों के कारण अवैयक्तिक नगरीय जीवन की स्थापना हो रही थी, इसीलिए वे पहले के भाँति शांति और स्थिरता का समर्थन कर रहे थे। इस तरह समाजशास्त्र ने व्यक्ति के स्थान पर विश्लेषण की इकाई के रूप में समाज पर जोर दिया। समाज में परम सामंजस्य तथा स्थिरता को प्रमुख माना गया तथा अंतर-संबंधित व अंतर-निर्भर के रूप में समाज के विभिन्न भागों को मान्यता दी गई। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि समाजशास्त्र पर रूढ़िवादी प्रतिक्रियाओं का बहुत प्रभाव था। इसके अलावा ज्ञानोदय के विचारकों ने यह महसूस किया कि अतीत में वापिस नहीं पाया जा सकता, बल्कि

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

समाज में एक वैज्ञानिक सोच को अपनाकर उसे बेहतर बनाया जा सकता है। अत: ज्ञानोदय तथा रूढ़िवादी विचार मिलकर समाजशास्त्र के विज्ञान के निर्माण में सहायक बने।

सामाजिक मानवविज्ञान का उद्‌भव

सामाजिक मानवविज्ञान मानव विज्ञान का ही एक अंग है। इसकी उत्पत्ति ऐतिहासिक रूप से मानव विज्ञान के अन्य घटकों के विकास से संबंधित है। मानव विज्ञान के लिए सबसे पहले यूनानियों 1595 में 'एन्थ्रोपोलॉजिया' शब्द प्रयोग किया था। 1798 में 'एन्थ्रोपोलॉजिया इन प्रैग्नैस्थिर हिंसिकट' नाम की एक पुस्तक इमानुएल कांट ने प्रकाशित की थी। इसके अलावा यात्रियों, अन्य लोगों के लेखन आदि से मानव के इतिहास के विषय में पता चलता है। मानवविज्ञान की शुरुआत के संकेत ग्रीको-रोमन पुनर्जागरण काल में भी मिलते हैं, जो कि विशेष रूप से हेलिकर्नासस (484-425 बीसी) के हेराडोटस के लेखन से शुरू हुआ। हेरोडोटस को नृवंशविज्ञान का अग्रदूत कहा जा सकता है। उस समय के ग्रीक दार्शनिक मुख्यत: सुकरात, प्लेटो और अरस्तु ने भी मानव व समाज के अध्ययन पर प्रभाव डाला। इसके पश्चात् रोमन दार्शनिक मार्कस तुलिपस सीरेरो ने मानव जीवन को समझने में काफी प्रयास किये। इसके बाद 16वीं शताब्दी में कुछ दार्शनिकों, जिनमें थॉमस हॉब्स और मॉकियावेली भी शामिल हैं, ने समाज व राज्य के अध्ययन में रुचि दिखाई।

विकास का पहला चरण

रूसो, विको, बैरन डी मॉन्टेक्वड तथा जॉन लॉक जैसे बड़े दार्शनिकों ने समाज को समझने में बड़ा योगदान दिया तथा उस समय की सामाजिक घटनाओं को श्रेणीबद्ध किया। उनके इस कार्य ने मानव समाज के विज्ञान को एक दार्शनिक आधार दिया। पहले के दार्शनिक और ऐतिहासिक अध्ययनों से जो मानव विज्ञान और सामाजिक विज्ञान का विकास हुआ, वह दो चरणों में विभाजित था। पहला चरण (1725-1840) था। इसमें दार्शनिक वैज्ञानिक इतिहास से मनुष्य, समाज व सभ्यता के अध्ययन को अलग कर उसके द्वारा एक सामान्य सामाजिक विज्ञान को तैयार किया गया (बोगेट 1915-41)। होबेल (1940) ने मानव विज्ञान को प्राकृतिक विज्ञान से उत्पन्न हुआ माना है, जोकि परंपरा के एक बड़े परिमाण को वहन करती है, न कि इतिहास या दर्शन को। इवांस प्रिचर्ड ने सामाजिक मानव विज्ञान की प्रकृति के विषय में कहा था, "सामाजिक मानव विज्ञान को प्राकृतिक विज्ञान के रूप में देखने वाले तथा जो इससे मानविकी समझते हैं, उन लोगों के विचारों के बीच एक बड़ा अंतर है। मानव विज्ञान व इतिहास के बीच संबंध के अध्ययन के लिए यह अंतर बहुत महत्त्व रखता है।

विकास का दूसरा चरण

दूसरे चरण में प्राकृतिक विज्ञान का विकास हुआ। विभिन्न प्रयासों के बाद 1870 तक भौतिक मानव विज्ञान, प्रागैतिहासिक तथा नृवंशविज्ञान को मानव विज्ञान का समेकित रूप माना जाने लगा। इस काल में मानव विज्ञान को शैक्षणिक विषय में शामिल किया गया। फ्रेड डब्ल्यू वोगेट, सामाजिक विज्ञान की उत्पत्ति को सामजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान की उत्पत्ति के मार्ग के रूप में देखते हैं। उनका कहना है कि अठारहवीं सदी के प्रगतिविदों ने सामान्यीकृत सामाजिक विज्ञान विषय की नींव रखी थी, किंतु मानव की संस्कृति की खोज उन्नीसवीं सदी के दौरान प्रगतिशील रही, जिसमें मानव वैज्ञानिक विज्ञान के लिए एक मॉडल के रूप में कार्य किया गया। हालांकि प्रत्यक्ष रूप से वोगेट अठारहवीं शताब्दी के प्रगतिविदों को मानव विज्ञान के अग्रदूत नहीं मानते, फिर भी इनके द्वारा किये गए प्रयास सामाजिक मानव विज्ञान का आधार बने। मार्विन हैरिस, मानव विज्ञान के विकास के इतिहासकार थे, जिन्होंने मानव विज्ञान को इतिहास के विज्ञान के रूप में देखा।

आधुनिक सामाजिक मानव विज्ञान का उद्‌भव

ब्रानिस्लो मालिनोव्स्की को आधुनिक सामाजिक मानव-विज्ञान का संस्थापक माना जाता है। उन्होंने नृवंशविज्ञान विधि का परिचय कराया तथा उनका दृष्टिकोण विकासवादी और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अलग कार्यात्मक था। ए.आर. रैडक्लिफ ब्राउन को भी इनके साथ ही आधुनिक मानव विज्ञान के संस्थापक के रूप में देखा जाता है। इनका सैद्धांतिक दृष्टिकोण प्रमुख है, जिसे संरचनात्मक-कार्यात्मकता कहा जाता है। इसी श्रेणी में लेवी स्ट्रॉस का नाम भी शामिल किया जाता है, जिन्होंने संरचनात्मक मानव विज्ञान के सिद्धात को स्थापित किया। लेवी स्ट्रॉस को मिथक, धर्म, संस्कृति तथा सामाजिक संगठनों के विषयों पर 20वीं शताब्दी के सबसे ज्यादा प्रभावशाली विचारकों में से एक माना जाता है। इसी समय मानव विज्ञान (सामाजिक मानवविज्ञान) का उद्‌भव पेशेवर संघों के रूप में हुआ। सबसे पहला मानव विज्ञान संगठन 1837 में गठित हुआ, जिसका नाम 'ऐबिरिजबीज प्रोटेक्शन सोसाइटी' था। उसके बाद 1902 में 'अमेरिकी मानव विज्ञान संघ' की स्थापना हुई। 1951 में अमेरिकन एसोसिएशन फॉर द एडवांसमेंट ऑफ साइंस ने मानवविज्ञान को मान्यता दी तथा 1882 में मानव विज्ञान के लिए एक अलग विभाग दिया। भारत में 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बंगाल की एशियाटिक सोसायटी स्थापित की गई, किंतु इसमें संदेह है कि भारत मानव विज्ञान का उद्‌भव कब हुआ। भारत में मान्यता प्राप्त मानवविज्ञान कार्यों को ब्रिटिश प्रशासकों ने ही संभाला था। बीसवीं शताब्दी में सरत चन्द्र राय ने छोटानागपुर की जनजातियों के विषय में जानकारी एकत्रित की थी।

सामाजिक मानव विज्ञान के प्रणेता

सामाजिक मानव विज्ञान से परिचित कराने का श्रेय लुईस हेनरी, जॉन फर्ग्यूसन मैक्लेनैन (1827-1881) एडॉल्फ बास्टियन (1826-1905), सर एडवर्ड बर्नेट टायलर (1858-1917), सर जेम्स जॉर्ज फ्रैंजर (1854-1941) और डब्ल्यू.एच.आर. रिवर्स (1846-1922) जैसे मानवविज्ञानियों को जाता है। इनके

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

अलावा और भी मानवविज्ञानी हैं, जिन्होंने योगदान दिया था। हेनरी लुईस मॉर्गन ने संबंध प्रणाली पर अध्ययन करके समाज के विकासवादी चरणों को विकसित किया। कार्ल मार्क्स ने इनके कार्यों से प्रभावित होकर ही वर्ग के ऐतिहासिक सिद्धांत तथा ऐतिहासिक भौतिकवाद को विकसित किया। इसके अलावा आदिम विवाह प्रणाली, कानून, टोटेमिस व रिश्तों की समझ में स्कॉटिश नृवंश विज्ञानी जॉन फर्ग्यूसन मैकलेनान आदि ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। एडॉल्फ बस्टियन जोकि पहले चिकित्सक थे और बाद में मानवविज्ञानी बने, उन्हें जर्मन मानवविज्ञान का जनक माना जाता है। उनकी विख्यात पुस्तकें 'तीन-वॉल्यूम ग्रंथ, डेर मेन्शेक इन डेर गोशिचटे (1860 मैनिन हिस्ट्री)' थी, जिसने मानव मनोविज्ञान तथा सांस्कृतिक, इतिहास पर विचारों को प्रोत्साहन दिया। सर एडवर्ड बर्नेट टायलर ने मुख्यत: सांस्कृतिक विकास और प्रसार, धर्म तथा जादू की उत्पत्ति के सिद्धांतों को समझाया। उनकी 'संस्कृति' तथा 'सांस्कृतिक अस्तित्व' की वैचारिक परिभाषा को आज भी मान्यता दी जाती है।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. समाजशास्त्र की उत्पत्ति का वर्णन करें।

उत्तर–समाजशास्त्र मानव समाज का अध्ययन है। यह सामाजिक विज्ञान की एक शाखा है, जो मानवीय सामाजिक संरचना और गतिविधियों से संबंधित जानकारी को परिष्कृत करने और उनका विकास करने के लिए, अनुभवजन्य विवेचन और विवेचनात्मक विश्लेषण की विभिन्न पद्धतियों का उपयोग करता है, अक्सर उसका ध्येय सामाजिक कल्याण के अनुसरण में ऐसे ज्ञान को लागू करना होता है। समाजशास्त्र की विषयवस्तु का विस्तार, आमने-सामने होने वाले संपर्क के सूक्ष्म स्तर से लेकर व्यापक तौर पर समाज के बृहद स्तर तक है।

समाजशास्त्र, पद्धति और विषय वस्तु, दोनों के मामले में एक विस्तृत विषय है। परम्परागत रूप से इसकी केन्द्रीयता सामाजिक स्तर-विन्यास (वर्ग), सामाजिक संबंध, सामाजिक संपर्क, धर्म, संस्कृति और विचलन पर रही है तथा इसके दृष्टिकोण में गुणात्मक और मात्रात्मक शोध-तकनीक दोनों का समावेश रहा है। चूंकि अधिकांशत: मनुष्य जो कुछ भी करता है, वह सामाजिक संरचना या सामाजिक गतिविधि की श्रेणी के अन्तर्गत सटीक बैठता है, इसी कारण समाजशास्त्र ने अपना ध्यान धीरे-धीरे अन्य विषयों; जैसे–चिकित्सा, सैन्य और दंड संगठन, जनसंपर्क और यहां तक कि वैज्ञानिक ज्ञान के निर्माण में सामाजिक गतिविधियों की भूमिका पर केन्द्रित किया है। सामाजिक वैज्ञानिक पद्धतियों की सीमा का भी व्यापक रूप से विस्तार हुआ है। 20वीं शताब्दी के मध्य के भाषाई और सांस्कृतिक परिवर्तनों ने तेजी से समाज के अध्ययन में भाषा विषयक और व्याख्यात्मक दृष्टिकोण को उत्पन्न किया। इसके विपरीत, हाल के दशकों ने नये गणितीय रूप से कठोर पद्धतियों का उदय देखा गया है; जैसे–सामाजिक नेटवर्क विश्लेषण।

प्रश्न 2. समाजशास्त्र की उत्पत्ति में 1789 के फ्रांसीसी आंदोलन का क्या योगदान था?

उत्तर–18वीं शताब्दी तक समाज के बारे में कोई विशेष चिंतन नहीं हुआ, किंतु औद्योगिक क्रांति (1760) एवं फ्रांसीसी क्रांति (1789) के परिणामस्वरूप समाज से संबंधित विचार दिखाई देने लगे एवं समाज के विज्ञान से जुड़े होने की आवश्यकता को मान्यता मिलने लगी। अठारहवीं शताब्दी के दौरान अन्य यूरोपीय देशों की भ्रांति फ्रांस भी कारण और तर्कवाद के युग में मुड़ चुका था। वहां फ्रांसीसी लोगों को प्रभावित करने वाले दार्शनिक तर्कवादी थे, जिनका यह मानना था कि सभी वास्तविक वस्तुएँ कारण द्वारा सिद्ध की जा सकती हैं। फ्रांसीसी क्रांति के दौरान निरंकुश राजतंत्र का अंत किया गया तथा लोकतंत्र की शुरुआत हुई। इस काल में यूरोपीय समाज की राजनीतिक संरचना पूर्णतया बदल गई थी। इसके अलावा इस क्रांति के साथ ही राजनीतिक क्रांतियों का एक लंबा सिलसिला शुरू हुआ, जो उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक चला, जोकि समाज-जीवन संबंधी सिद्धांतों के निर्माण के उदय में सबसे तात्कालिक कारण साबित हुआ। इन क्रांतियों के फलस्वरूप बहुत से सकारात्मक प्रभाव सामने आए। यूरोप के लोगों ने भौगोलिक, व्यापारिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्रों में प्रगति की तथा साथ ही लोगों ने मध्यकालीन संकीर्णता को छोड़कर स्वयं को नई खोजो, नवीनतम विचारों तथा सामाजिक सांस्कृतिक एवं बौद्धि उन्नति से सुसज्जित किया।

प्रश्न 3. सामाजिक मानव विज्ञान की उत्पत्ति के प्रचलन की आलोचना करें।

उत्तर–मानवविज्ञान का प्रारम्भ प्राकृतिक विज्ञान और मानविकी के एक मिलान बिंदु के रूप में हुआ है। सामाजिक मानवविज्ञान, मानव विज्ञान का ही एक अंग है। ऐतिहासिक रूप से इसकी उत्पत्ति मानव विज्ञान के अन्य घटकों के विकास से सम्बद्ध है। समाजशास्त्र, दर्शन, जातीय इतिहास, इतिहास, मनोविज्ञान (सामाजिक मनोविज्ञान), राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र जैसे सामाजिक विज्ञान के विषयों से सामाजिक मानव विज्ञान का उद्भव अत्यंत निकटता से सम्बद्ध है, किंतु समाजशास्त्र सामाजिक मानवविज्ञान का सबसे निकटतम विषय है। मानवविज्ञान के अत्यधिक विस्तृत विषय-वस्तु को ध्यान में रखते हुए इस अनुशासन के बौद्धिक विकास और उद्भव की व्यापक रूप से खोज दुष्कर कार्य है।

पश्चिमी समाज समाजशास्त्र की तरह मानवविज्ञान के उद्भव और विकास को प्रत्यक्ष रूप से वैज्ञानिक विकास से जोड़ता है। सदियों पहले मानव विज्ञान शब्द के अस्तित्व को अगर माना जाए, तो "मानवविज्ञान एक बहुत पुराना विषय है। मानव विज्ञान शब्द प्राचीन यूनानियों ने भी उपयोग किया था। उनके लिए एन्थ्रोपोलॉजिया 1595 में उत्पन्न हुआ था। 1798 में इमानुएल कांत ने 'एन्थ्रोपोलॉजिया इन प्रैग्मैटिस्चर हिंसिकट' नामक पुस्तक प्रकाशित की थी। पुर्तगाली और स्पेनियों ने 15वीं और 16वीं शताब्दी में अफ्रीका के हिस्सों

www.neerajbooks.com